अध्याय – 5

वीररस के कवित्त : भूषण

जन्म – सन् 1613 ई.
मृत्यु – सन् 1715 ई.

रीतिकाल की शृंगार प्रधान काव्य–सरिता में वीररस की प्रबल धार बहाने वाले कवि भूषण का जन्म उत्तरप्रदेश में कानपुर के तिकवाँपुर गाँव में हुआ था। उनके पिता रत्नाकर त्रिपाठी थे। इनका मूल नाम घनश्याम था तथा भूषण इनकी उपाधि है। इन्हें छत्रपति शिवाजी तथा छत्रसाल महाराज के दरबार में विशेष सम्मान प्राप्त हुआ।

कवि भूषण की रचनाओं में शिवराजभूषण, छत्रसालदशक, शिवाबावनी, भूषण हजारा व भूषण उल्लास आदि का उल्लेख किया जाता है। उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना शिवराजभूषण है। भूषण की रचनाओं में राष्ट्रीयता की भावना, वीरता के उद्‌गार व ओज गुण का वैशिष्ट्य है। कवि की वाणी देशवासियों के लिए आज भी प्रेरणादायी है।

प्रस्तुत पाठ में कविवर भूषण के पाँच कवित्त लिए गए हैं। शिवाजी जब युद्ध के लिए प्रस्थान करते है तो संसार भर में खलबली मच जाती है। धूल के गर्द में सूर्य तारे जैसा लगने लगता है; समुद्र थाली में रखे पारे की तरह प्रतीत होता है। औरंगजेब के दरबार में समुचित सम्मान न पाकर क्रोध से उबलते शिवाजी का रौद्र लाल मुख देखकर औरंगजेब का मुख काला व उसके सिपाहियों का मुख भय से पीला पड़ जाता है। शेषनाग, विधाता(कर्तार) व यमराज के दायित्वों को असल में तो शिवाजी ही निभाते हैं। शिवाजी का शत्रुओं पर आधिपत्य ऐसा है जैसे इन्द्र का जंभासुर पर, बड़वानल का सागर पर, राम का रावण पर, वायु का बादलों पर, शंकर का कामदेव पर, परशुराम का सहस्रबाहु पर, दावाग्नि का वृक्षों पर, चीते का मृग–समूह पर, शेर का हाथियों पर, प्रकाश का अंधकार पर व श्रीकृष्ण का कंस पर है। इसी प्रकार कवि शिवाजी की तुलना गरुड़, सिंह, इन्द्र, बाज एवं सूर्य से करता है। कवि मानता है कि सूर्य के समान नवखण्ड भूमण्डल पर सर्वत्र शिवाजी का वर्चस्व है।

वीररस के कवित्त

साजि चतुरंग–सैन अंग में उमंग धारि
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
भूषन भनत नाद–बिहद नगारन के
नदीनद मद गैबरन के रलत है।
ऐलफैल खैलभैल खलक में गैल गैल
गजन की ठैलपैल सैल उसलत है।
तारा सो तरनि धूरिधारा में लगत जिमि

थारा पर पारा पारावार यों हलत है।

सबन के ऊपर ही ठाढ़ो रहिबे के जोग
ताहि खरो कियो छ–हजारिन के नियरे।
जानि गैरमिसिल गुसीले गुसा धारि मन,
कीन्हो ना सलाम न बचन बोले सियरे।
भूषन भनत महाबीर बलकन लाग्यौ
सारी पातसाही के उड़ाय गए जियरे।
तमक तें लाल मुख सिवा को निरखि भए,
स्याहमुख नौरँग, सिपाह–मुख पियरे।

तेरे हीं भुजानि पर भूतल कौ भार
कहिबे कौं सेषनाग दिगनाग हिमाचल है.
तेरौ अवतार जग–पोषन–भरनहार,
कछु करतार कौ न ता मधि अमल है।
साहि–तनै सरजा समथ्थ सिवराज कवि
भूषन कहत जीवौ तेरो ही सफल है।
तेरौ करबाल करै म्लेच्छन कौ काल
बिन काज होत काल बदनाम धरातल है।

इंद्र जिम जंभ पर बाड़व ज्यौं अंभ पर,
रावन सदंभ पर रघुकुलराज है।
पौन वारिवाह पर संभु रतिनाह पर
ज्यौं सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुंड पर,
भूषन वितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम–अंस पर कान्ह जिमि कंस पर,
यौं मलेच्छ–बंस पर सेर सिवराज है।

गरुड़ को दावा जैसे नाग के समूह पर
दावा नागजूह पर सिंह सिरताज को
दावा पूरहूत को पहारन के कूल पर
दावा सबै पच्छिन के गोल पर बाज को
भूषन अखंड नवखंड महिमंडल में

तम पर दावा रविकिरनसमाज को
पूरब पछाँह देस दच्छिन तें उत्तर लौं
जहाँ पातसाही तहाँ दावा सिवराज को

शब्दार्थ–

करबाल – तलवार, कटार साजि – सजी, सजना जंग – युद्ध
चतुरंग – हाथी, घोड़ा, पैदल व रथ सेना नाद –आवाज, शोर
सैल – पर्वत उलसत – उखड़ना पातशाही – बादशाहत
निरखी –देखकर स्याह–काला मजहब – धर्म
आबाद – फलना–फूलना दावा – प्रभुत्व मलेच्छ – मुगल
द्विजराज – परशुराम रतिनाह – कामदेव दिगनाग – दिशाओं के हाथी

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. 'भनत' शब्द का अर्थ है –

(अ) कविता (ब) कहना
(स) सजना (द) खनकना ( )

2. कवि किसकी भुजाओं पर धरती का भार मानता है –

(अ) कछुए की (ब) शेषनाग की
(स) शिवाजी की (द) औरंगजेब की ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. भूषण के संकलित छंदों में कौनसा रस और कौनसा गुण है ?
2. कवि भूषण की दो रचनाओं के नाम बताइए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भूषण ने अँधेरे पर किसका अधिकार बताया है ?
2. सहस्रबाहु पर किसने विजय प्राप्त की थी ?
3. वितुण्ड पर किसका अधिकार होता है ?

निबन्धात्मक प्रश्न –

1. पठित अंश के आधार पर सिद्ध कीजिए कि भूषण वीर रस के कवि थे।

व्याख्यात्मक प्रश्न –

सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. तेरे हीं भुजानि.....बदनाम धरातल है।
2. इन्द्र जिम जंभ ..... सिवराज है।

* * * * *